मनख का दुखा की शरुवात

लखबाळो Edward Hughes
सम्झाबाळो Byron Unger; Lazarus
अनुवाद करबाळो Royson Norman D'Souza
रूप बदलबाळो M. Maillot; Tammy S.

60 मंसुं 2 कहाणी

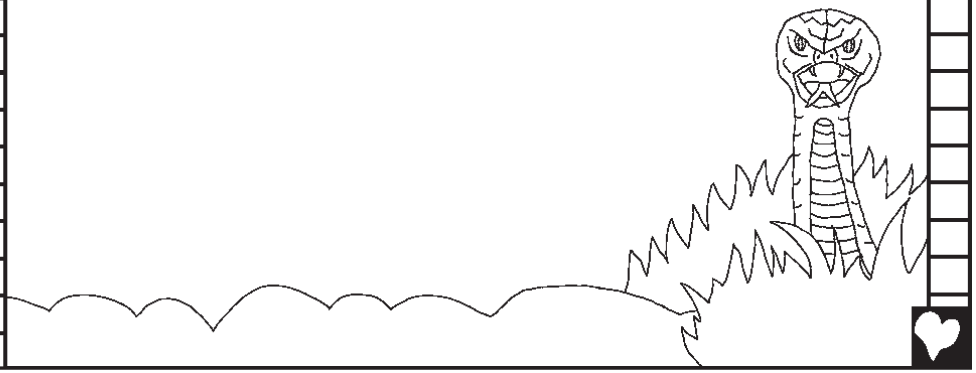

M1914.org

Bible for Children, PO Box 3, Winnipeg MB R3C 2G1 Canada

अनुज्ञापत्र (लाइसेंस): थे यां कहाण्या की फोटू कॉपी और छपवा सको छो, शरित याई छ क बैच्अ कोन्अ।

परमेसर सबळी चिजा न्अ बणायो! अर जद्या परमेसर पहला मनख, आदम न्अ बणायो तो वो खुद की घराळी हव्वा की लार आदन का बाग मं रेव्अ छो।

1

हालताणी वे परमेसर को धन्यवाद करता होया राजी-राजी रेरया छा, पण एक दन ...

2

मनखा न्अ बणार परमेसर घणौ दुखी छो। पण एक मनख परमेसर को प्यारो छो।

19

वो मनख नूह छो। सेत का कुणबा को नूह एक धारमी अर नशपाप मनख छो। वो परमेसर की लार चाल्अ छो।

20

वो खुद का तीनु छोरा न्अ परमेसर को खियो मानबो सखायो। अब परमेसर नूह न्अ एक घणूई खास अर अणौता रूप सु काम म्अ लेबा की जुगत बणायो।

21

मनख का दुखा की शरुवात

बाइबल, परमेसर का बचना की कहाणी

मं पायो गियो

उत्तपति 3-6

"ज्यो थांकी जन्दगी मं उजाळो देव्अ छ।"
भजन 119:130

ढुंढाड़ी Dhundhari

परमेसर जाण्अ छ क आंपा अस्यान को गुनो करया छा जिन्अ वो पाप खेव्अ छ। अर पापा की सजा मौत छ।

परमेसर आंपा सुं अतरो परेम करअ छ क वो खुद का छोरा ईशु न्अ आंपणा पापां की सजा बेई सुळी प चढ़र खुद का पराणा की बलि देबा खन्दायो। ईशु मरर फेरू जीवतो होयो अर पाछो सरग मं चलग्यो। अब परमेसर आपणा पापां न्अ छमा कर सक्अ छ।

ज्यो थे थांका गुना सुं अर पापां सुं बचबो चावो छो तो उंसुं अरदास करो; प्यारा परमेसर मन्अ बस्वास छ क ईशु म्हार बेई खुद की जन्दगी की बलि दियो छ अर अब फेरू जीवतो होयो छ। हे परमेसर तु म्हारी जन्दगी मं आ अर म्हारा पापां न्अ छमा कर दअ। जिसुं म एक नुई जन्दगी जी सकूं। अर सदा हमेश थारी लार रे सकूं। हे परमेसर म्हारी सायता कर क म थारी ओलाद की न्याऊ जी सकूं। आमीन। यूहन्ना 3:16

बाइबल पढ़ा अर रोजीना परमेसर सुं बातां करां।

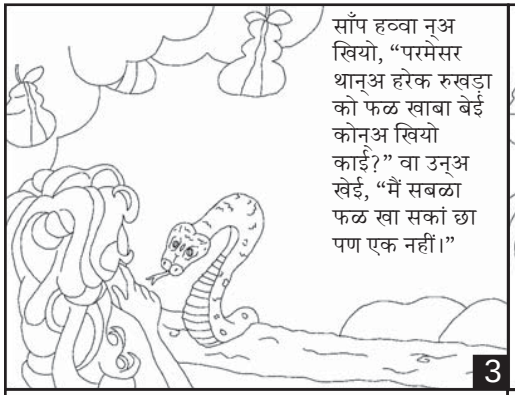

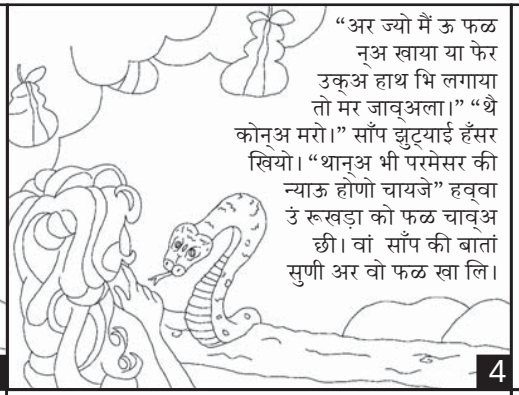

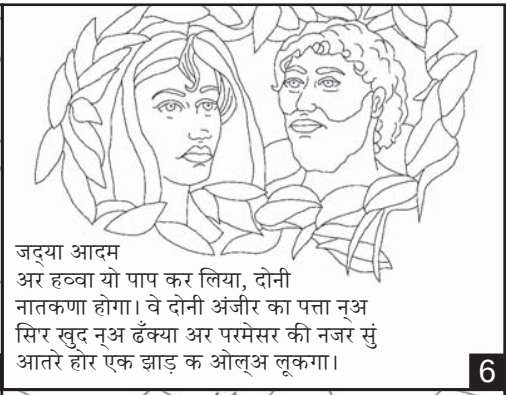

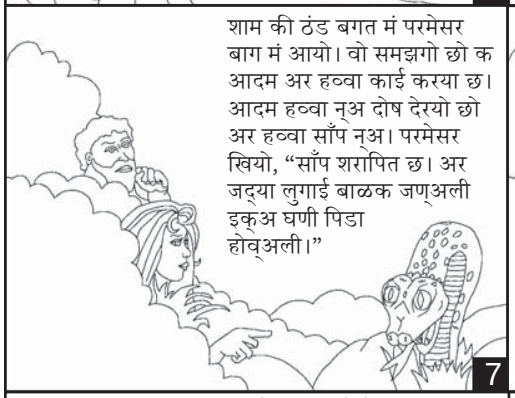

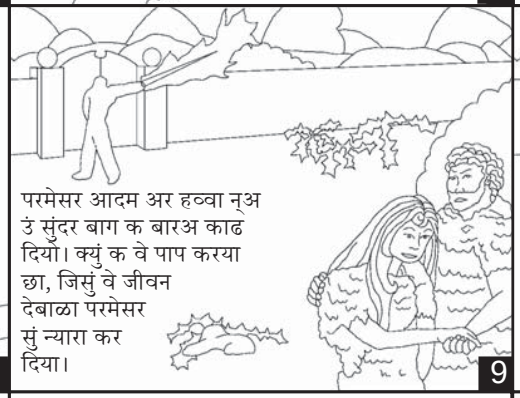

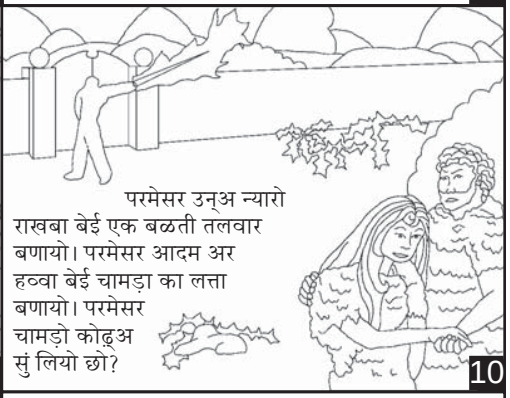

साँप हव्वा न्अ खियो, “परमेसर थान्अ हरेक रुखड़ा को फळ खाबा बेई कोन्अ खियो काई?” वा उन्अ खेई, “मैं सबळा फळ खा सकां छा पण एक नहीं।”
3
“अर ज्यो मैं ऊ फळ न्अ खाया या फेर उक्अ हाथ भि लगाया तो मर जाव्अला।” “थै कोन्अ मरो।” साँप झुट्याई हँसर खियो। “थान्अ भी परमेसर की न्याऊ होणो चायजे” हव्वा उं रूखड़ा को फळ चाव्अ छी। वां साँप की बातां सुणी अर वो फळ खा लि।
4
परमेसर को खियो उंगाल्या पाछ्अ हव्वा आदम न्अ भी फळ खाबा बेई उठाई। आदम न्अ खेणी चाआयजे छी, “नहीं! म परमेसर को खियो कोन्अ उंगालू।”
5
जद्या आदम अर हव्वा यो पाप कर लिया, दोनी नातकणा होगा। वे दोनी अंजीर का पत्ता न्अ सि'र खुद न्अ ढँक्या अर परमेसर की नजर सुं आतरे होर एक झाड़ क ओल्अ लूकगा।
6
शाम की ठंड बगत मं परमेसर बाग मं आयो। वो समझगो छो क आदम अर हव्वा काई करया छ। आदम हव्वा न्अ दोष देरयो छो अर हव्वा साँप न्अ। परमेसर खियो, “साँप शरापित छ। अर जद्या लुगाई बाळक जण्अली इक्अ घणी पिडा होव्अली।”
7
“आदम, क्यं क तु पाप करयो छ, जिसुं या जमी काँटा अर काँटाळा झाड़ा सुं भर जाव्अली। अर अब थन्अ रोजीना खाबा सुं पेली कड्डी मेनत अर पसीनो बुवाणी पड़्अली।”
8
परमेसर आदम अर हव्वा न्अ उं सुंदर बाग क बारअ काढ दियो। क्युं क वे पाप करया छा, जिसुं वे जीवन देबाळा परमेसर सुं न्यारा कर दिया।
9
परमेसर उन्अ न्यारो राखबा बेई एक बळती तलवार बणायो। परमेसर आदम अर हव्वा बेई चामड़ा का लत्ता बणायो। परमेसर चामड़ो कोढ्अ सुं लियो छो?
10
एक बगत, आदम अर हव्वा को परवार होयो। उकी पहली ओलाद, कैन, एक माळी छो। अर वांकी दीसरी ओलाद, हाबिल एक गुवाळ छो। एक दन केन चनिसिक शब्जया परमेसर बेई लेर आयो। हाबिल परमेसर बेई खुद की सबसुं चोखी लळडी लायो। हाबिल का चढ़ावा सुं परमेसर घणौ राजी छो।
11
परमेसर कैन का चढ़ावा सु राजी कोन्अ छो। कैन घणो रोषा होयो। पण परमेसर खियो, “अर ज्यो तु वो करअ ज्यो चोखो छ तो स्वीकार कोन्अ करयो जाव्अलो काई?”
12
कैन का रोष कोन्अ बझ्या। थोड़ा दना पाछ्अ एक छाप्पर मं हाबिल प हमलो कर — उकी हत्या कर दियो।
13
परमेसर कैन न्अ खियो “थारो भाई हाबिल कढ्अ छ?” “म कोन्अ जाणु”, कैन झुट बोल्यो “मं म्हारा भाई को रुखाळो छु काई?” परमेसर कैन न्अ सजा दियो, वो उंसु खेती करबा की तागत कुसका लियो अर भटकबा बेई छोड़ दियो।
14
कैन परभु क्अ साम्अ सुं चलगो। वो आदम अर हव्वा की छोरी सुं ब्याऊ करयो। वो खुद को परवार बसायो। बेगोई कैन का पोता अर पड़पोता सुं वो शहर भरगो जिन्अ वो बसायो छो।
15
वां दना मं, आदम अर हव्वा को परवार बेगो-बेगो बढ़रयो छो। वां दना मं आज की देख्या लोगबाग साऊटा दना ताणी जिन्दा रेव्अ छ।
16
जद्या वाक्अ सेत पदा होयो, तो हव्वा खेई, “परमेसर मन्अ हाबिल की ठोर सेत दियो छ।” सेत घणु धरमात्मा छो। ज्यो 912 बरस जीवतो रियो अर उक्अ घणा छोरा छोरी होया।
17
दनिया मं मनख पीढ़ी-पीढ़ी कमजोर होता गिया। अर आखरी मं परमेसर मनख ज्यात न खत्म करबा को फसलो कर लियो अर सबळा जीव।
18